E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(2): 243-245
Received: 12-08-2019
Accepted: 16-09-2019

मुकेश कुमार महतो
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
मुकेश कुमार महतो
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

स्वाधीन भारत के राजनीतिक जीवन की अभिव्यक्ति

मुकेश कुमार महतो

सारांश
स्वाधीनता की प्राप्ति के पश्चात् समग्र देशवासियों के समक्ष ऐसे वातावरण को उपस्थित करने की आवश्यकता थी जिसमें उन्हें स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए हर प्रकार से शक्ति सम्पन्न होने, एकता एवं शांति को स्थापित करने तथा निद्वन्द्व रूप से प्रगति पथ पर अग्रसर होते रहने की प्रेरणा मिल पाती। परन्तु देश के अधिकांश नेताओं और अन्य अधिकारियों ने राष्ट्र–सेवा की अपेक्षा स्वार्थ–सिद्धि को ही अधिक महत्त्वपूर्ण माना। परिणामतः व्यावहारिक स्तर पर अधिक लोगों में राष्ट्रीयता की सच्ची भावना का अभाव ही दिखाई पड़ता रहा। यही कारण है कि अपेक्षित मात्रा में न तो नागरिकों का नैतिक उन्नयन ही संभव हो सका और न देश स्वावलम्बी ही बन सका। फिर भी, अनेक प्रकार की योजनाओं द्वारा देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने का प्रयास किया जाता रहा है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में इन सभी राजनीतिक स्थितियों का प्रदर्शन किया गया है।

मुख्यभाब्दः स्वाधीन भारत, राजनीतिक जीवन, अभिव्यक्ति, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी

प्रस्तावना
उदयशंकर भट्ट ने 'पार्वती' नाटक में यह दिखाया है कि जिन लोगों ने पराधीन देश में त्याग नहीं किया स्वातंत्र्य आन्दोलन में भाग नहीं लिया, कष्टसहिष्णुता नहीं दिखायी, वे आज भी स्वतंत्रता के सच्चे महत्त्व को नहीं समझ रहे हैं और देश की प्रगति में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। इस नाटक में गुलाब, गुलाब के पिता एवं गुलाब के पति वैसे ही लोगों के प्रतिरूप बनकर उपस्थित हैं। ये सभी रिश्वत तथा भ्रष्टाचार को प्रश्रय देकर देश को पतन की ओर ले जाना चाहते हैं। [1] आज के अधिकांश पदाधिकारियों एवं व्यापारियों के आचरण भी इसी प्रकार के हो रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर भातर में नकली नेताओं की संख्या बहुत बढ़ गई है। 'समाज' नाटक में इनकी काली करतूतों पर प्रकाश डाला गया है। मिथ्या भाषण करना [2] जनता को बहकाना [3] चंदा एकत्र कर सुख भोगना [4] आदि आज के नेताओं के प्रमुख कार्य दिखाई पड़ते हैं। इसीसे देश की दशा सुधरने के बदले बिगड़ती ही चली जा रही है। प्रस्तुत नाटक में विशुद्धानन्द नामक पात्र राजनीतिक स्थिति को सुधारने का केवल एक ही उपाय बताते हैं और वह है स्वार्थ–त्याग। वे ज्ञान प्रकाश से स्पष्ट शब्दों में कहते हैं– ''जब तक हमलोग देश और जाति पर स्वार्थ की बलि दे देना नहीं सीख लेंगे, तब तक हमारी दशा सुधर नहीं सकती।'' [5]
'अश्क' ने 'अंजो दीदी' नाटक में स्वाधीन भारत के अस्तव्यस्त राजनीतिक जीवन को उपस्थित किया है। सिटी मजिस्ट्रेट नीरज अपनी पत्नी ओमी से कहता है कि आजकल अपढ़, अनभिज्ञ और अत्यन्त साधारण स्तर के व्यक्ति मंत्री बन जाते हैं [6], इसलिए न तो वे अपने विभाग का सफल संचालन कर पाते हैं और न ही जन–जीवन पर उनके व्यक्तित्व का अच्छा प्रभाव पड़ता है। नीरज के विचारानुसार निम्नस्तर के नेताओं ने राजनीतिक जीवन को इतना कलुषित बना दिया है कि ''कोई शरीफ आदमी सफल मेजिस्ट्रेट या कलक्टर हो ही नहीं सकता।'' [7] इतना ही नहीं, स्वार्थ सिद्धि के लिए मंत्री स्वयं नियमों का उल्लंघन करवाते हैं। यहाँ तक कि चपरासी की नियक्ति तक के लिए वे स्वयं पैरवी करते हैं [8] और सभी ऊँचे पदों पर अपने सम्बन्धियों तथा परिचितों को रख देना चाहते हैं चाहे वे कितने ही अयोग्य क्यों न हों।
'नई राह' नाटक का नायक किशोर देश की राजनीतिक अधोगति एवं उससे उद्धार पाने के उपायों पर विचार व्यक्त करता है। उसके अनुसार स्वाधीन भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक विडम्बना यह है कि अधिकांश नेता जन–सम्पर्क से दूर ही रहने का प्रयास करते हैं। भारत मुख्यतः गांवों का देश है। अतएव गांवों को प्रगतिशील बनाये बिना देश का सम्यक् विकास संभव नहीं हो सकता। पर नेता गाँवों में केवल वोट मांगने के लिए जाते हैं, उसके बाद से फिर आगामी चुनाव के पहले तक जनता–जनार्दन से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता। [9] इस सन्दर्भ में एक बात और ध्यातव्य है। प्रजातंत्रात्मक राज्य में अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति जनता को अत्यन्त जागरूक रहना चाहिए। सिर्फ नेताओं और शासनाधिकारियों द्वारा दिए गए आश्वासनों की प्रतीक्षा करते रहने से

अपेक्षित उत्थान नहीं किया जा सकता। वस्तुतः ''शासन करनेवाले कितने भी अच्छे हों वे कुछ नहीं कर सकते जब तक जनता अपने कर्तव्य को स्वयं न निभावे।'' [10] 'धीरे–धीरे' नाटक में वृन्दावन लाल वर्मा ने भी इसी बात को स्पष्ट किया है कि आज की नेतागिरी व्यवसाय बन चकी है। स्वार्थ–सिद्धि के लिए नेतागण जनता को गमराह करने में भी संकोच का अनुभव नहीं करते। अतः अपने भले–बुरे के सम्बन्ध में जनता को स्वयं विचार करना चाहिए। "नजर बदली, बदल गये नजारे'' नाटक में भी यही दिखाया गया है कि पराधीनता के समय जिस प्रकार जमींदारों और अंगरेज शासकों द्वारा जनता शोषित होती थी उसी प्रकार आज के मंत्री और अन्य अधिकारी अपने सुखोपभोग के लिए जनसामान्य का शोषण कर रहे हैं। इस दृष्टि से स्वाधीन देश में भी परिस्थिति बदल नहीं गई है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे ''शतरंज है बिछी पर मोहरे बदल गये।'' [11] ऐसी स्थिति में जनता को स्वयं ही सतर्क तथा सचेष्ट रहने की आवश्यकता है। सचमुच ''आजादी आई तो क्या आई, अगर हमारे अन्दर जिम्मेवारी नहीं आई, सावधानी नहीं आई। [12] हाँ, इतना परिवतन अवश्य हुआ कि अब निर्धन और नीची जाति के लोगों को भी सम्मान का अवसर मिलने लगा। प्रस्तुत नाटक में देवराम का मुखिया बनना और दीवान का उसके यहाँ फैसला करवाने के लिए पहुँचना ऐसी ही घटना है। [13] पर नीची अथवा पिछड़ी जाति के नाम पर अपढ़ और मूर्ख लोगों का मुखिया से लेकर मंत्री तक बन जाना राजनीतिक अथवा सामाजिक प्रगति का सूचक नहीं है। 'छाया' और 'बंधन' नाटकों में हरिकृष्ण 'प्रेमी' ने यह दिखलाया है कि कानून तथा दण्ड–विधान का रूप आज भी ऐसा है कि जिससे गरीबों को ही परेशान होना पड़ता है। न्याय जैसे धनवानों के पीछे–पीछे चलता है [14] और प्रत्येक परिस्थिति में ''कानून गरीबों को ही अपराधी'' [15] मानता है। लक्ष्मीनारायण मिश्र के "सिन्दूर की होली'' नाटक में डिप्टी कलक्टर मुरारी लाल स्वयं स्वीकार करते हैं कि ''हमलोग मनुष्य और उनके अधिकार की रक्षा के लिए कुसी पर नहीं बैठते....हमलोगों का तो काम है केवल कानून की रक्षा करना।'' [16] और ''आजकल का कानून ही ऐसा है। इसमें सजा उसको नहीं दी जाती जो कि अपराध करता है।'' [17] गाल्संवर्दी के 'जस्टिस' नाटक में भी हम यही देखते हैं। वस्तुस्थिति से अवगत रहने पर भी न्यायाधीश को कानून के पीछे–पीछे चलना पड़ता है और अन्ततः वह विलियम फेल्डर को बचाने में पूर्णतः असमर्थ हो जाता है।

'शरविद्ध स्वप्न' नाटक में स्वाधीनता के बाद नेताओं को केवल अपने स्वार्थों की पूत्ति के लिए कार्य करते देखकर गाँधी जी अत्यन्त दुःख का अनुभव करते हैं। [18] 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक में भी स्वार्थी नेता पर व्यंग्य किया गया है। 'हवा का रूख' नाटक में शील ने स्वाधीन भारत की दो प्रमुख राजनीतिक समस्याओं को उपस्थित किया है। प्रथमतः सामान्य नेता से लेकर मंत्री तक अवसरवादी और मिथ्यावादी बन गये हैं। वे गांधीजी के चित्र का साक्षी लेकर नैतिकता की शपथ लेते हैं, जनता की सेवा करने के लिए बड़ी–बड़ी प्रतिज्ञाएँ करते हैं, पर उनका आचरण ठीक इनके विपरीत होता है। [19] इसलिए वे क्रमशः जनता की श्रद्धा खोते जा रहे हैं। द्वितीय, धनी वर्ग कुछ नेताओं को अपने पक्ष में मिलाकर जनता का शोषण करते हुए केवल अपने स्वार्थों से चिपका रहना चाहता है। परिणामतः देश में एक ऐसा दल बनता जा रहा है जो धनीवर्ग का प्रत्यक्ष विरोधी है। सचमुच साम्यवाद को पनपने का अवसर भी यही वर्ग दे रहा है। [20]

'जनता का सेवक' नाटक में उन नेताओं पर व्यंग्ध किया गया है जो जनता का अधिकाधिक शोषण कर भी अपने को उनका सेवक ही धोषित करवाना चाहते हैं। इसके साथ ही प्रस्तुत नाटक में चनाव की राजनीति पर भी प्रकाश डाला गया है। चुनाव के समय छात्र नेता राजीव, मजदूर नेता तेजनाथ, सम्पादक सुब्रह्मण्यम्, पूँजीपति बांकेमल आदि अपने–अपने निहित स्वार्थों के कारण गलत–से–गलत माध्यमों को अपनाने में भी संकोच का अनुभव नहीं करते। [21] बांकेलाल तथा शीतल प्रसाद मत प्राप्त करने के लिए जनता के समक्ष अनेक प्रकार के झूठे वायदे करते हैं, जनता को भ्रम में रखते हैं और चुनाव जीत जाने पर केवल उन्हीं लोगों से सम्पर्क रखते हैं जिनसे अधिक–से–अधिक धन की प्राप्ति होती है। [22] सब्रह्मण्यम् सही–सच्ची बातों को समाचारपत्र में प्रकाशित ही नहीं होने देते। [23] तेजनाथ के जीवन में सिद्धान्त और व्यवहार में कोई मेल ही नहीं दिखाई पड़ता। उनके चरित्र का रहस्योद्घाटन करते हुए किशोर कहता है – ''मजदूरों के नेता बने फिरते हैं। होटलों में शराब पीते हैं, मोटरों में घूमते हैं, लानत है।'' [24] विमला रैना के 'तीनयुग' नाटक में यह दिखाया गया है कि स्वाधीनता के बाद नेता से लेकर नागरिक तक केवल आराम और सुखोपभोग करना चाहते हैं। पर देश को आगे बढ़ाने के लिए उत्साह और उमंग से काम करने की आवश्यकता अब पहले से भी अधिक बढ़ गई है। [25] चिरंजीत लिखित 'तस्वीर उसकी' नाटक में राष्ट्र–युद्ध में वीरगति प्राप्त करनेवाले नलिनवर्मा के चरित की महत्ता प्रदर्शित है। इसके साथ ही देशद्रोही मदनवर्मा के कलंकित जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है जो शत्रु के एजेंटों द्वारा फैलाये गये अर्थ–जाल में फँसा हुआ है। [26] पर मदनवर्मा की पत्नी अंजना का जीवन देशभक्ति से परिपूर्ण है। अतएव वे अपने पति का विरोध करती हैं। उनका यहां तक कहना है कि ''ऐसे सुहाग का जल जाना ही अच्छा'' है। [27] वे 'रानी झांसी समाज' की अध्यक्षा हैं एवं मुनाफाखोरी, जखीराबाजी और चोरबाजारी करनेवालों के विरुद्ध मी एक प्रबल आन्दोलन शुरू करनेवाली हैं। [28] इसीप्रकार के अभियोग में वे अपने पति मदनवर्मा को गिरफ्तार कराने के लिए पुलिस को फोन भी करती हैं। [29] पर मदनवर्मा आत्महत्या कर लेते हैं। अंजना के पुत्र सुशील में भी देश–सेवा की सच्ची भावना हैं। वह कॉलेज में पढ़ते समय एन०सी०सी० में भर्ती है और पढ़ाई समाप्ति पर सेना में काम करने का निश्चय कर चुका है, क्योंकि उसे ''धोखेबाज शत्रुओं के साम्राज्यवादी पंजों से अपने देश की पावन धरती का पप्पा–चप्पा मुक्त, कराना है।'' [30]

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित 'नेफा की एक शाम' तथा 'वतन की आबरू' क्रमशः चीनी आक्रमण एवं पाकिस्तानी आक्रमण की घटनाओं पर आधारित नाटक हैं। 'नेफा की एक शाम' में चीन की बर्बरता और भारतीय सैनिकों की वीरता का दिग्दर्शन कराया गया है। चीनी जासूस सुहाली गूगी बनकर तथा मातई के बड़े बेटे नीमों को प्रेम का स्वांग दिखाकर उससे भेद लेना चाहती है, पर नीमों अन्ततः सँभल जाता है और उसे गोली मार देता है। [31] इसी प्रकार चीनी सैनिक नमक, कम्बल एवं अन्य. अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर नेफा के नागरिकों से भेद प्राप्त करने के लिए उनसे. मेलजोल बढ़ाने का प्रयास करते हैं। [32] चीनी सेना के बांगचू नामक आदमी के बहकावे में आकर ही नीमों अपने देशभक्त छोटे भाई देवल का विरोध करता है। परन्तु बाद में उसे भी रहस्य का पता चल जाता है और उसकी राष्ट्रीय भावना सजग हो उठती है। वह चीनियों की घृणित चाल को समझकर बांगचू को गोली मार देता है और कहता है– 'कुत्त! तू समझता था नीमों हमेशा सोता रहेगा? थू है तुझ पर।' [33] इसके पहले मातई ने भी अपने अनुभव के आधार पर यह विचार प्रकट किया था कि चीनियों में मनुष्यता का पूर्ण अभाव है। वह घायल बांगचू को अपने बेटे की तरह स्नेह देती है, पर स्वस्थ हो जाने पर बांगचू उसे बंदूक दिखाता है। वृद्धा मातई उसे धिक्कारती हुई कहती है – ''यही तेरे देश का रिवाज है?'' [34] शिव प्रसाद सिंह लिखित 'घाटियाँ गूंजती हैं, एवं रेवती सरण शर्मा रचित 'अपनी धरती' नाटक भी चीनी–आक्रमण के कथानक पर ही आधृत हैं।

'वतन की आबरू' नाटक में सन् 1965 ई० में पाकिस्तान द्वारा किये गये आक्रमण के समय भारतीय जवानों की वीरता एवं नागरिकों की सच्ची देशभक्ति का प्रदर्शन किया गया है। इस

नाटक में महबूब नाम का पात्र पाकिस्तानी सेना का आदमी है जो दो वर्षों से छिपकर भारतीय सैनिक मोर्चों का पता लगा रहा है। वह इलाही बख्श की बड़ी लड़की पशमीना से शादी कर लेने का स्वांग रचता रहता है और इस बहाने भारतीय सेना का भेद जानना चाहता है। परन्तु जब पशमीना को यह पता चल जाता है कि महबूब छम्ब जाने के नाम पर दुश्मनों को खबरें पहुँचाने जाता है, तो उसे वह गोली मार देती है और वह वहीं मर जाता है। [35] पशमीना और उसकी छोटी बहन रेशमा दोनों में सच्ची देशभक्ति है। इसलिए वे दोनों मेजर जावेद एवं घूसपेठिये कालेखाँ तथा गुलाम को गलत रास्ता बताकर उसकी पूरी बटालियन को मरवा डालती हैं। पाकिस्तानी सेना वहां पहुंच जाती है जहाँ भारत की तगड़ी फौज जमा रहती है। [36] जावेद जब घबड़ाकर पशमीना से इसके सम्बन्ध में पूछता है तो वह कहती है – ''शैतान! अब तू शायद हमेशा याद रखेगा कि कश्मीरी खूबसूरती के अन्दर इस्पाती सख्ती छिपी है।'' [37] पशमीना को जब गोली लगती है, तो वह कहती है– ''हमारे वतन की आबरू इतनी सस्ती नहीं। हम न रहें तो क्या, कश्मीर जिन्दा रहेगा, हिन्दोस्तान जिन्दा रहेगा।'' [38] पशमीना के मरने के बाद भी रेशमा को उसकी आवाज सुनाई पड़ती है– ''खुदा से दुआ कर कि हम अगले जन्म में फिर इसी पाक जमीन पर पैदा हों और अपने वतन की आबरू के लिए इसी तरह मरें'' [39] मुसलमान के नाम पर मेजर जावेद इलाहीबख्श को साम्प्रदायिक चक्कर में फँसाकर भेद जानने का प्रयास करता है। पर इलाहीबख्श सच्चा भारतीय नागरिक है। इसलिए वह कहता है कि देश का दुश्मन हमारा दुश्मन है चाहे वह मुसलमान हो या किसी भी मजहब को माननेवाला हो। [40] 'वतन की आबरू' की तरह ही राजकुमार के 'हाजीपीर का दर्रा' नाटक में भी पाकिस्तानी आक्रमणकाल में कश्मीरी जनता की जागरूकता एवं भारतीय सैनिकों के महान् साहसिक कार्यों का दिग्दर्शन कराया गया है। कश्मीर की सजग जनता पाकिस्तानियों के प्रलोभन एवं बहकावे में न आकर अपनी फौज और पुलिस को पूर्ण सहायता पहुँचाती है। [41] इसके साथ ही नौशेरखाँ, पांडे, रणवीर आदि जैसे सैनिकों पर भारत को सदा गर्व रहा है। [42] इन बहादुर सैनिकों की कार्रवाइयों को देखकर पाकिस्तानी सैनिकों और सैनिक अधिकारियों को सर झुकाने के लिए विवश हो जाना पड़ा। अकबर जालिम खाँ और मोहम्मद से कहता है– ''मुझको ऐसा लगा जैसे हिन्दुस्तानी फौज से मौत भी डरती है।'' [43] दिसम्बर, 1971 ई० में पाकिस्तान को पुनः ऐसा ही अनुभव हुआ है। संसार के अन्य देश भी भारत की वीरता देखकर आश्चर्यचकित हैं। वस्तुतः भारतीय सेना और सभी नागरिक अपने देश की रक्षा के लिए काल का सामना करने के लिए भी सदा तैयार हैं।

अतएव इस विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी–नाटक–साहित्य में राजनीति के सभी अंगों की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ–संकेत

1. पार्वती, पृ० 82
2. समाज, पृ० 31, घनानन्द बहुगुणा
3. वही, पृ० 23
4. वही
5. समाज, पृ० 32, घनानन्द बहुगुणा
6. अंजोदीदी, पृ० 100
7. वही, पृ० 66
8. वही, पृ० 66
9. नई राह, पृ० 70, हरिकृष्ण, 'हरिकृष्ण 'प्रेमी'
10. वही, पृ० 48
11. नजर बदली, बदल गये नजारे, पृ० 11, राधिकारमण प्रसाद सिंह
12. वही, पृ० 41
13. वही, पृ० 48
14. छाया, पृ० 68
15. बंधन, पृ० 28
16. सिन्दूर की होली, पृ० 31
17. वही
18. शरविद्ध स्वप्न, पृ० 26, राजेश्वर गुरु
19. हवा का रूख, पृ० 16
20. हवा का रूख, पृ० 47
21. जनता का सेवक, पृ० 36–37; 53, 63
22. वही, पृ० 78
23. वही, पृ० 53
24. वही, पृ० 52
25. तीन युग, पृ० 114
26. तस्वीर उसकी पृ० 60
27. वही, पृ० 63
28. वही, पृ० 5
29. वही, पृ० 63
30. वही, पृ० 16
31. नेफा की एक शाम, पृ० 106–110
32. नेफा की एक शाम, पृ० 35
33. वही, पृ० 73
34. वही, पृ० 66
35. वतन की आबरू, पृ० 101
36. वही पृ० 123
37. वतन की आबरू, पृ० 123
38. वही
39. वही, पृ० 124
40. वही पृ० 66
41. हाजीपीरका दर्रा, पृ० 45
42. वही, पृ० 71
43. वही, पृ० 61